8

गोलियत

नास्तिकता की नाज़ुक जगह

(17:1–54)

यूनानी मिथिहास का एक महानायक है अखिलेस। ट्रॉय के युद्ध में जब यूनान ने ट्रॉय को हराया था उसकी प्रमुख भूमिका थी। होमर ने *द इलियाड* में उसका वर्णन किया है। उसके जन्म के तुरन्त बाद उसकी मां ने उसके शरीर को हानि से बचाने के लिए स्टिज़्स नदी में डुबो दिया था। परन्तु एड़ी से पकड़ा होने के कारण पानी उसके शरीर के इस भाग को नहीं लगा था जिस कारण उसकी ऐड़ी पर भेद्य (नाजुक) दाग रह गया था। ट्रॉय युद्ध में अखिलेस की एड़ी में उसके शत्रु पैरिस द्वारा छोड़ा गया एक विषैला तीर लग गया था। उस घाव से अखिलेस की मृत्यु हो गई।

अखिलेस का यह चित्रण और उसका अपराजेय लगना अधर्म का एक उपयुज़्त उदाहरण है जो परमेश्वर, बाइबल, कलीसिया तथा उस सब के जो मसीही है, विरुद्ध खड़ा है। अधर्म के ठट्ठे तथा मज़ाक अजेय लगते हैं, परन्तु वास्तव में वे एक दुखद भेद्यता वाली नाज़ुक जगह हैं।

1 शमूएल 17 में, अधर्म की भेद्यता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। हमारा परिचय गत के रहने वाले गोलियत नामक एक दानव से होता है। वह अधर्म के हर पहलू का मूर्त रूप है। वह दिखावटी, परमेश्वर का भय न मानने वाला, निर्दयी तथा लोभी था। इस अध्याय में अधर्म के विषय में एक अद्‌भुत पाठ मिलता है।

मिकमाश में पलिश्तियों की पराजय से एक के बाद एक युद्ध होने लगे जो शाऊल के शासन तक जारी रहे (14:52)। 1 शमूएल 17 में उन महत्वपूर्ण लड़ाइयों में से एक इस युद्ध के दौरान हुई। इस्राएली एला नामक घाटी में पलिश्तियों के सामने थे। इस लड़ाई के प्राकृतिक परिदृश्य ने इसे विलक्षण बना दिया था। घाटी लगभग एक मील चौड़ी थी। इसके बीच में कटाव के कारण बारह फुट गहरी और बीस फुट चौड़ी एक खड्ड बन गई थी। गरमियों में उस खड्ड के नीचे से एक छोटा सा नाला बहता था और इसमें गोल चिकने पत्थर होते थे। घाटी की असामान्य भौगोलिक बनावट ने दोनों सेनाओं में से किसी के लिए भी हमला करना असज़्भव बना दिया था, ज़्योंकि आक्रमणकारी सेना के लोग दर्रे के दूसरी ओर के किनारे पर चढ़ते समय मारे जा सकते थे। इसका एक ही हल था कि एक के साथ एक आदमी लड़े। चालीस दिन तक दोनों सेनाएं उस घाटी के दोनों ओर इकट्ठी होतीं, गोलियत

की ललकार सुनतीं और चली जातीं। रोज़ दिन में दो बार ऐसा होता था (17:16)।

सिपाहियों के लिए रसद उनके घरों से आती थी और यहीं पर दृश्य में जवान दाऊद प्रवेश करता है। दाऊद सज़्भवतया अठारह वर्ष का होगा, जो सैनिक सेवा के लिए बहुत छोटा था (गिनती 1:3)। उसे "जवान" (17:58) कहा गया है जो विवाह की उम्र के नवयुवक को कहा जा सकता है। यिशै ने उसे खाना देकर और अपने तीन भाइयों की खबर लाने के लिए भेजा था।

दाऊद की जवानी की उत्सुकता उसे इस्राएली छावनी में थोड़ा जल्दी ले आई (17:20), और उसने उस दिन दानव की ललकार पहली बार सुनी। किसी सैनिक के द्वारा भी गोलियत की ललकार का जवाब न देने के कारण उसे आश्चर्य हुआ। यह देखकर कि कोई भी गोलियत का जवाब नहीं दे रहा, दाऊद ने गत वासी इस दानव का जवाब देने के लिए आमने-सामने के युद्ध के इज़्तालीसवें दिन कदम रखे। उस निर्णायक दिन जवान दाऊद ने अधर्म की भेद्यता का पता लगाकर परमेश्वर के लिए एक बड़ी विजय हासिल की।

नास्तिकता का खोखला घमण्ड

चालीस दिन तक गोलियत ललकारता रहा (17:4से)। दोनों ओर की सेनाओं को लग रहा था कि गोलियत को सर्वसज़्मति से "वीर" मान लिया गया है (17:4, 23)। मूलतः यह पदनाम लड़ाई जीतने को जाने वाले के लिए इस्तेमाल किया जाता था। गोलियत की उपस्थिति प्रभावशाली थी और स्पष्टतया इस्राएली उससे डर गए थे। वह दानव नौ फुट से ऊपर था; वह औसतन इस्राएलियों से ऊंचा था। वह बदनाम अनाक के वंश में से था (गिनती 13:28)।

शारीरिक डील डौल के अलावा गोलियत के हथियार भी डरावने थे। उसने पीतल की पज़रों वाली झिलम पहनी हुई थी। उसी का भार दो सौ पौंड (लगभग 74 किलोग्राम) से अधिक था। घुटनों से नीचे उसकी टांगों पर पीतल के कवच थे जबकि कंधे पर कांस्य की बरछी होती थी। उसका भाला भी बहुत बड़ा था जिसका भार पच्चीस पौंड (अर्थात 10 किलो के लगभग) था। वह पीतल का एक टोप पहनता था और उसके आगे-आगे बड़ी ढाल लिए एक आदमी था।

गोलियत ने अपनी शारीरिक बनावट के अलावा ललकार से भी इस्राएलियों को कंपकपी लगा दी थी (17:10)। उसकी आवाज़ सुनकर ही इस्राएली कांप जाते थे। जिसमें उनका राजा भी शामिल था जो दूसरे सब लोगों से ऊंचे कद का था। इस्राएली गोलियत की हर चुनौती को सुनकर भय से आतंकित हो जाते थे।

गोलियत की यह बेकार शेखी आज परमेश्वर के लोगों का सामना करने वाले आधुनिक नास्तिकों की तरह ही है। कुज़्यात वोल्टेयर शेखी मारता था कि वह अपने जीते जी देखेगा कि बाइबल केवल अजायब घरों में ही पाई जाएगी। उसकी मृत्यु के बाद वोल्टेयर की प्रिंटिंग प्रैस में ही बाइबले छपीं, और लोगों में बांटे जाने से पहले उन्हें उसी के घर में रखा जाता था! अज़्तूबर 20, 1980 के *टाइम* मैग्ज़ीन में कार्ल सैगन ने सृष्टिवादियों को चुनौती दी

कि वे परमेश्वर में अपने विश्वास का बचाव करें।[1] जब चुनौती को स्वीकार कर लिया गया, तो सैगन ने कभी उसका जवाब नहीं दिया![2] सैगन और उसके जैसे दूसरे लोग परमेश्वर को नकारते हैं, परन्तु गोलियत की बातों की तरह, उनकी शेखियां भी खोखली ही हैं!

आधुनिक विश्वासी ध्यान दें। नास्तिकता की शेखियों का कोई आधार नहीं है (तु. 2 पतरस 2:12, 17-19)। कुछ लोगों का तर्क है कि बाइबल कट्टर बनाती, परन्तु ये शेखियां भी तो तथ्यों वाले प्रमाण से नहीं दी जातीं! नास्तिकता, अज्ञेयवाद, तथा संदेहवाद कभी-कभी प्रभावशाली लगते हैं, परन्तु गोलियत की तरह ही नास्तिकता भी खोखली शेखियों से भरपूर! (17:49, 50)।

नास्तिकता की स्पष्ट भेद्यता

गोलियत चाहे लगता था कि हार नहीं सकता, परन्तु अखिलेस की एड़ी उसके लिए विनाशकारी सिद्ध हुई। शाऊल द्वारा दाऊद को गोलियत से लड़ने की अनुमति देते ही, उसने उस जवान को अपने हथियार देने की कोशिश की (17:38)। इन हथियारों में उसके "युद्ध वस्त्र" थे, जो सिपाहियों द्वारा पहना जाने वाला सुरक्षा कवच होता था। परन्तु दाऊद ने "चरवाहे के वस्त्र" (17:40) पहनना ही पसन्द किया। उसके हाथ में कोई तलवार नहीं थी; पहनने के लिए कोई कवच नहीं था और न ही वह अपने साथ कोई हथियार ले गया था। उसके पास केवल एक साधारण सा गोफन था। परमेश्वर में दाऊद का विश्वास ही *उसका* सबसे बड़ा हथियार था!

दोनों सेनाएं पहले ही अपनी-अपनी जगह पर जा चुकी थीं। आराम करते हुए उन्होंने जवान दाऊद को दर्रे की ढलान से नीचे उतरते देखा। शांति से उसने नाले पर रुककर पांच चिकने-चिकने पत्थर चुने। फिर, पलिश्ती यह देखकर हैरान थे कि दाऊद दर्रे से चढ़कर पलिश्तियों के क्षेत्र में जा खड़ा हुआ! स्पष्टतया गोलियत वहां बैठा हुआ था और यह समझकर कि दाऊद उसकी चुनौती का जवाब दे रहा है, वह उठकर धमकियां और गालियां देता हुआ दाऊद की ओर बढ़ने लगा। दाऊद के जवाब में कोई भय नहीं था, केवल विश्वास था। एक पत्थर चुनकर परमेश्वर की सहायता से उसने उस दानव को ढेर कर दिया और उसी की तलवार से उसका सिर धड़ से अलग कर दिया!

यद्यपि आधुनिक मनुष्य तथा गत के रहने वाले उस दानव में सदियों का अन्तर है, परन्तु नास्तिकता के खोखलेपन के खात्मे के लिए वही तत्व आवश्यक हैं। गोलियत तथा नास्तिकता की भेद्यता इन तीन बातों में मिलती है: परमेश्वर को ठुकराना और उसकी निंदा करना (17:43, 45); सुरक्षा के लिए स्वयं पर भरोसा (17:10, 45; यिर्मयाह 10:23); छोटी-छोटी बातों के खतरे को न देख पाना (अर्थात एक गोफन, 17:43; तु. 1 कुरिन्थियों 1:27); घमण्ड तथा अक्खड़पन (17:44; नीतिवचन 16:18)।

नास्तिकता का भविष्य

नास्तिकता विश्वासियों के लिए चुनौती का सामना करना पड़ता ही रहेगा। यह चुनौती

शिक्षकों, पक्के मित्रों, साथ काम करने वालों या परिवार के लोगों से ही हो सकती है। विश्वासियों को मज़ाक तथा सवालों का सामना करना पड़ेगा। शैतान आक्रमण करने में कभी नरमाई नहीं बरतता है (2 कुरिन्थियों 4:8, 9; 10:3-5)। शाऊल और इस्राएल के लोगों की तरह बहुत से मसीही अर्थात पवित्र लोग हैं जो नास्तिकता का सामना करने पर दब जाते हैं (17:24)। बहुत कम पवित्र लोग दाऊद जैसे होते हैं जिसने कायर बनने से इन्कार कर दिया (17:36, 48)। विश्वासी यदि दृढ़ विश्वास के साथ नास्तिक शत्रु का सामना करें तो विजय निश्चय उन्हीं की होगी! (17:45-51; याकूब 4:7)।

अपने जीवनों में नास्तिकता पर विजय पाने के लिए हमें निम्न बातों का अहसास होना आवश्यक है:

पहला, नास्तिकता अपनी ललकार से दबाव डालने की कोशिश करती है और वे ललकारें हमारे मनों में भय उत्पन्न करने के लिए बनाई गई होती हैं (1 तीमुथियुस 1:7, 8; यहेजकेल 2:6; 3:9; 1 कुरिन्थियों 16:13; फिलिप्पियों 1:27, 28)।

दूसरा, हमें परमेश्वर के लिए खड़े होना चाहिए चाहे हम अकेले ही क्यों न हों! दाऊद ने डरी हुई भीड़ के साथ खड़े रहने से इन्कार कर दिया था (17:32)। जब तक परमेश्वर उसके साथ था दाऊद अकेला युद्ध का बोझ उठाने को तैयार था (17:37; तु. 1 कुरिन्थियों 15:58)।

तीसरा, नास्तिकता के ठट्टों तथा शेखियों पर विजय पाने का एकमात्र ढंग परमेश्वर में भरोसा रखना है (17:37, 47; तु. भजन संहिता 27:1; 35:1-7; यशायाह 65:24; 2 शमूएल 22:1 से; भजन संहिता 18:29-35)।

चौथा, जब नास्तिकता का सामना दृढ़ *तथा* सुसंगत विश्वास से किया जाता है, तो यह उल्टे पांव भाग जाएगी! (17:51; मत्ती 4:11)। शाऊल नास्तिकता का सामना नहीं कर पाया क्योंकि उसने आज्ञा तोड़कर परमेश्वर के साथ सारे सम्बन्ध खराब कर लिए थे। शाऊल गोलियत को मारने वाले को केवल प्रतिज्ञाएं ही दे सकता था (17:25)। परन्तु आइए, दाऊद की तरह परमेश्वर में और उस जीवन में जो शुद्ध है, विश्वास रखें और हम नास्तिकता को पराजित कर देंगे! परमेश्वर का कमज़ोर से कमज़ोर बालक जिसका विश्वास स्वर्गीय पिता में है, इतना मजबूत है कि वह संसार पर विजय पा सकता है! (यूहन्ना 16:33)।

सारांश

आश्चर्य की बात नहीं है कि आज कितने ही लोगों के जीवनों में गोलियत हैं ? वे उन लोगों के लिए जो नास्तिक हैं, मील का पत्थर हैं। उस लड़ाई में उसका न जीत पाना भी इस बात का संकेत है कि मसीह का ढंग ही एकमात्र सही ढंग है! आइए हम दाऊद के विश्वास का अनुसरण करके उसकी तरह ही नास्तिकता पर जय पाएं।

ग्रीन माउंटेन बॉयज़ का लीडर कर्नल इथन ऐलन एक प्रसिद्ध नास्तिक था। उसकी पत्नी परमेश्वर का भय रखने वाली औरत थी और उनकी बेटी को सुसमाचार सिखाया गया

था। लड़की बीमार हो गई और उसके पिता को उसके अंतिम शज़्द सुनने के लिए बुलाया गया: ''पिता जी, मेरी मृत्यु निकट है। ज़्या मैं आपके सिखाए सिद्धांतों पर विश्वास करूं या उस शिक्षा पर जो मां ने मुझे दी है?'' अपने ज़ज़्बात पर काबू पाकर एक क्षण रुकने के बाद उसने उज़्र दिया, ''जो तेरी मां ने सिखाया है, उसी को मान।'' नास्तिकता की भेद्यता स्पष्ट है। सुसमाचार की आज्ञाओं का पालन करने से कोई कैसे इन्कार कर सकता है?

टिप्पणियां

[1]फ्रेड्रिक गोल्डन, ''द कॉस्मिक एज़्सप्लेनर,'' *टाइम,* 20 अज़्तूबर 1980, पृ. 63. [2]थॉमस बी. वारेन, ''विल प्रोफै. कार्ल सैगन फेस अप टू एन एज़्सेटटेंस ऑफ़ हिज़ 'ओपन चैलेंज' टु बिज़्लिकल क्रियेश्निस्ट्स?'' *स्पिरचुअल सॉर्ड,* अज़्तूबर, 1981, पृ. 28–31.